॥श्रीः॥

शिवोक्त-

बृहत्सावरतन्त्र।

(विधान सहित)

[illegible]देव्युवाच।

भगवन् मम प्राणेश सर्वलोक शिवंकर ॥
बृहत्सावरतन्त्राणि वक्तुमर्हस्यशेषतः ॥ १ ॥

पार्वतीजी बोलीं कि—हे हमारे प्यारे प्राण-नाथ ! हे समस्त संसारके मंगलकर्ता ! भगवन् ! महादेव ! आप सम्पूर्ण बृहत् सावर मन्त्र यन्त्र और तन्त्रोंको मुझसे वर्णन करिये ॥ १ ॥

महादेव उवाच।

वक्षाम्यहं सावराणि मन्त्रतन्त्राणि पार्वति ॥
सर्वकाम प्रसाधीनि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥ २ ॥

श्री महादेवजी बोलेकि—हे प्यारी पार्वती ! जितने सावर मन्त्र और तन्त्र हैं, जिनसे कि—समस्तकामना सिद्ध होजाती है, उनको हम तुमसे वर्णन

करते हैं, तुम एकाग्र चित्त से श्रवण करो॥ २

तत्रादौ बशी करण मंत्रः ।

ओं नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनायं त्रिपुर बाहनाय अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। इसको सिद्ध योगमें १०८ बार जपे। और सुपारी पढ़के देतो वश्य होताहै।

स्त्रीवशी करण ।

ओं नमो कट बिकट घोर [illegible] अमुकं मे वस मानय स्वाहा। प्रथम इसमंत्रको ग्रंहणमें १०००० जपै। फिर रविवारको इससे अभिमन्त्रित करके भोजन करै और भोजन करते समय उसका नाम लेता जावै जिसै [illegible]में करना चाहे तौ शीघ्र वशीभूत होता है।

अन्यच्च ।

ओं चामुण्डे जय२ वश्यं करि जय २ सर्वसत्वा- न्नमः स्वाहा। इसको१००००वार जपै। फिर रविवार या भौमवारको उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित किया हुआ पुष्प जिसै दिया जायगा वोह वसमें अवश्य- मेव होगा।

१—पाठकों को ध्यान रखना चाहिये कि जहां 'अमुक' लिखा हो वहां उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिये जिस के ऊपर प्रयोग करना है।

अन्यच्च ।

ओं नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजनी सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द २ जिह्वे सर्व लोकं वश्य करि स्वाहा । १०००० जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है ।

श्वेतपाराजितामूलं चन्द्रग्रस्तेसमुद्धतम् ।
अजिताद्योनरस्तेन वशीकुर्याज्जगत्रयम् ॥ १ ॥
ताम्बूलं रोचनायुक्तं तिलकेन जगद्वसम् ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं भोजने पानमेव च ॥ २ ॥
सिलारोचन ताम्बूलं वारुणीतिलके कृते ।
संभाषणेन सर्वेषां वशीकर्णं च जायते ॥ ३ ॥
श्वरोनिवेष्टितं कृत्वा तेनैव तिलकं कृतम् ।
अदृष्टं तं न पश्यंति नार्यो वा पुरुषाश्च वा ॥ ४ ॥
ग्राह्यं शुक्ल त्रयोदश्यां श्वेतगुंजा समूलकम् ।
ताम्बूलं च दातव्यं सर्वलोक वशंकरम् ॥ ५ ॥

अन्यदपि ।

या अमीन या फामीन हमारे दिलसे फलानेका दिल मिलादे । गूगल लोबान की धूप पास रक्खै। और अग्नि के निकट बैठे जिसके ऊपर मंत्र चलाना हो उसकी नजरके सन्मुख बैठके उसे धूप दिखावै

जब उसकी दृष्टि उस धूप के ऊपर पड़े तब उसे अग्निमें गिरादे। फिर गूगल दिखावे और उसी प्रकार पूर्वोक्तरीतिसे मंत्र पढ़के अग्नि में गिरादे इस प्रकार२१ बारहोम करना। तथा ७ या १४ या२१ दिन उसी तरह होम करनेसे तत्काल वश्य होयगा।

यह मंत्र स्त्रियोंके ऊपर अपना प्रभाव शीघ्रही उत्पन्न करदेता है।

अन्यच्च।

पिंगलायै नमः। इसका २०००० जप है।

भ्रमरस्य पक्षयुगं शुकमांससमन्वितम्। स्वनामिका रुधिरंच कर्णमलं यं खादयति सवश्यो भवति।

अन्यच्च।

ओं हुं स्वाहा।

कृष्णा पराजितामूलं ताम्बूलेन समन्वितम्।
अवश्यं वै स्त्रियो दद्यात् वश्यंभवति नान्यथा॥ १॥

अन्यच्च।

ओं पिशाचरूपिण्यै लिंगपरिचुम्बयेत्। नागं विसिंचयेत्॥ अनेनमन्त्रेण यस्यनाम्ना एकविंशति वारं प्रातः मुखं प्रक्षालयेत्। अथवा जलमभिमंत्र्य ददाति सवश्यो भवति।

अन्यदपि ।

ओं नमोभगवती पुर२ वेशानि पुराधिपतये सर्व्व जगद्भयंकरि छीं भै ओं रां रां रं रीं क्लीं वालौंसः पंचकामवाण सर्वश्री समस्त नर नारी गणं मम वश्यं नय२ स्वाहा। इस मंत्रको १५ वार पढके अपने मुखके ऊपर हाथ फेर कर जिधर को देखै उधरही वश्य होय।

अन्यच्च ।

ओं नमो भगवति चामुण्डे महाहृदयकंपनी स्वाहा। इस मंत्र से २१ वार वीडे को अभिमंत्रित करके जिसे दियाजाय वोह वश में होगा।

अन्यच्च ।

क्लं क्लौं ह्रीं नमः। इस मंत्र को तीनों समय १००० हजार जपै तो पाताल लोक वशमें होता है। दस हजार जप करने से देवता वशमें होतेहैं। १००००० जप करने से त्रिलोकी वशमें होजाती है।

अन्यच्च ।

ओं ऐं ह्री श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यंकुरु२ सर्व्व कामान् मे साधय २। अनेन मंत्रेण अष्टोत्तर शतमभिमंत्र्य तिलकं दद्यात्तदासर्वजनवश्यो भवति

॥ प्रेतवरावेके मंत्र ॥

बांधो भूतजहांतु उपजो छाडोगिरे पर्वतचढाइ सर्गदुन्हेली पृथिवीतुजाभि भिलिमिलाहि हुंकारेह-नुवंतपचारइ भीमजारि जारिजारि भस्म करेजों चांपेसींउ ॥

॥ आत्मफूकन मंत्र ॥

ओंमुरतोकागंडा अष्टवेताल आठोवायु तीसोरह सेछेद भेदकीज्ञानमोरंगे नकरुद्यामोरमा नारायणी सप्तपाताल जानिमोर काजमोहिसाडारे तइथिला विकिटारआस आसविकिटारतो सोरषीमोगोरषीका रसीओंकारबीज गोरषीबज्रकराथिवों ॥

॥ बाबाआदममंत्रः ॥

गुरु सत्यं विस्मिल्लाहका पूज्योमा आधनकार आदि गुरु सृष्टिकरतार वेद वहर तारांहि एकी आइ युग चारि तीन लोक वेद चारि पांचो पांडव छवमा-रग सात समुद्र आठ वसु नवग्रह दशरावण ग्यारह रुद्र बारह राशि तेरह मोल चौदह शोक पंद्रह तिथि चारि खानि चारि वानि पांच भूत चौरासी आत्मा लाषाति अयोनि अष्टकुलीनाग तेंतिशकोटि देवता आकाश पाताल मृतलोक रात दिन पहर घरी दण्ड

पल विपल महारथ साषिधरभेहों अवजीकलुफ-
लानेकेपीरादेव दानव भूत प्रेतराखीसुजानुविनानु
किताकराषादितावा त्वागाठिमुठिरषणी मुखणी वि-
ळनी फोठौरीगहहीनी नाईकपोलाइअधोंगी करण
मूलवायुसूलुणसुरूननहरूवागडहरूवा जगरहूकरक्त
पीतमूत्रकुत्तडाढ़ारह प्रमेहगोलाफ्लाहान हरूआअ-
होगा सोगाअर्धशीशी कुटीलुती बुवारी मिरिगी क-
मलवांड हंडीआनुवाबुह येलगंड कवायुचोटफेटदिता
कितालापालगायाषरपितीलंघा उलंघा बाटघाटवा-
हरनिसारपसारसांझसकार कौनहु प्रकारहोइ हाड-
उदवार चामनाडी अर्द्धअंगजहारूसीदोहाइसलेमा-
नपैगम्बरकीतुरन्तविलाहीषीनजाही नातरुसवालाख
पैगंबरकी वजूथाप नवनाथ चौराशीसिद्धिकेसराप
शेषस्वरूपदी अहिआपीर मनेरीकिशक्ति वाबाआदम
कीभक्ति जरिभस्म होइजाय जाहि निहिनिषिद्धजाहि
जाइ पिंड कुशल दोष फिटु फिटु स्वाहा ॥

मंत्रभूतडायिनियांगल सर्वकेझारके ।

जैसे कैलोमाकार्य्य सरूपे करिकरिवो न करो
वलीतते रामलक्ष्मण सीतेया करिकोटि कोटि आज्ञा।

इस मंत्र से भूत डाइनि यांगल नाल नाई को झाड़ा देने से वाधा दूर होती है।

अथ देवीमंत्रः।

ओं रुनुं इझुनुं इमृत मारातं देवी ओरंपर तारा वीरमान्यो वीरतोन्यो हांकडांक महिमथन करणजोग भोग जोग धर छतीश नक्षत्र धर सर्प पति वासु की धर सप्तब्रह्मांडे पाति ब्रह्मो के छायाधौ देवीधौ देवताधौ डाइनिधौ गुरुराणाधौ भूतधौ प्रेतधौ धर धर मांचंढी वीजकरुवालषंडी धौर्यवागुटिनाय दाद दली इमान को चलंते केके जाते ओरेवीर भैरवी कामरूप कामचंडी धर धर वाकी महा कारुय करे मडरू मारौ कुकी धर वारण धरौवलीते ते कामरू कामचंडी इटमाया प्रसरणि कोटि कोटि आज्ञा देवी रामचंडी वीजे वालिषंडी चौदिगे ऐरलदेवी वसि-लाक्मिांडि चंडिचंद्र चमकिले सूर्य्यंटरिल ऐरलदेवी हरहरांपीर सुखिला कीटरे जीवो परांद्रिवाहंते खप्पर दाहिने हाथे छुरि ऐरलादेवीय अवरतारि डाइनि वांधो चुरइलिवांधु गुनीवांधु मोरा वांधु मसानीवांधु गुनिया नासुनी आवे गराणि आंवुलावे रांडेमाला डांडेजी वता डांडे हसैखेलै भारिवन झारो वलिते ते ते कामरू कामचंडी फोटिस आज्ञा॥

वाघ वरावेके मन्त्र ।

बैठीबैठी कहाचल्यौ पूर्वदेश चल्यौआंखिबांध्यौ तीनोकानवांधौ तीनोमुहबांधौ मुहकेतजिह्वा वांधौ अधौडांडबांधौ चारिउगोडबांधौ तेरीपोछिबांधौ न वांधौंतौंमेरी आनगुरीकी आन वज्र डांडबांधौदोहाइ महादेवपार्वतीकी पढिके चारि कांकर तीनि बेर पढि चारिउ तरफ डारै बीच बैठे ॥

अन्यच्च ।

ओं सत्यमाताशंकरपिताशंकरकिलइ चारिउदिशा जहां २ मैं शंकर जाइ तहां २ मेरो किंकर जाइ जहां जहां मेरी दीठि तहां तहां मेरी मूठि जहां जहां मेरा नादको शब्द सुनि आवे हो नरसिंहबीर माता बाघेश्वरीको दूध हराम करै कहो कवन २ किलोवानषुर्वान पंगुलीआर सादूल केशरि तेंदुवा सोनहरि अधिआगाधिआ अटिआर दूदिआर हरिआर काठि पठिपराधिता चलिघेरिये त नन्हिआरे अवनिकिलौ नारसिंहवार किलै कहु कवन २ किलौगाइका जायाः भद्रासिका जाया भेड़ी का जाया घोड़ी का जाया छेरी का जाया दुइयावचौ पावके घाउ लागइ शिव महादेव को जटा के घाव लागे पार्वती के वीर चूके हाके

हनुमन्त बरावे भीमसेनि मन्त्रै बांधे जो वायेसीम॥

अन्यच्च ।

आरीपुरवारी परवतपरवारी जहांवोइके पसारि जाको तेगौरानी रानी ताकी वनाइ जारीतिमें वांधो वाघ वोलाइ एहीवन छांडि दोसरे वनदेखि फेरीचा होइतौ महादेव गौरापारवती के दोहाइ हनुमंतजती की नोना चमारिकी आज्ञाका वातें कुवाचाचूकै तो ठाढ़ेसूखै गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च ।

डांडल कालक मुह विकराल विरराच्चदेकरे अहार नामदेव मेलजटाजाऊ वाघ जोजन सब आठ ॥

अन्यच्च ।

महादेवका कुक्कुर लुटै लुटैकान मोरे निकट आवहु सुनिआवै लोहनपह पाउ रच्चा करे श्रीगोरखराउ दशवारपढ़े सर्वांगं स्पृशेद्रेणुना ॥

अथ सूचीवन्धन मंत्रः ॥

धार धार धार वांधौ सातवार न लागै न फूटै न आवै घाव रच्चा करै श्रीगोरखराव मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति हनुवन्तवीर रक्षाकरै फुरो मंत्र ईश्वरो

वाच । सुई हाथ में लेके सातवेर मंत्र पढ़े फेरि जहा बांधे वहां छेदै ॥

पहुँचा छेदे के मंत्रः ।

कालेतीलकबेलातील गुजरी बैठा बीर पसारे सुई न वेधे माथाइ पीर न आवे काली करुइमती भारी दुष्यतिबुकीलार अवनी बांधो सूइ अपपाडे-कीधार आवे न लोह्र न फूटे घाउ रक्षाकरै श्रीगोरख राउ उरद पढ़िके बकराके मारो घाव न लगे॥

गागल छेदे के मंत्रः ।

नीरा धार बांधौ लक्षवार न बहै घाउ न फूटै धार रक्षा करै श्रीगोरखराउ ॥

धनुर्बंधनमंत्रः ।

ओंसारसारमहासार सोधाधौतीनिधार न धरै चोट न परै घाव रक्षाकरै श्रीगोरखराउ ॥

सर्वधार बंधन मंत्रः ।

जहिआ लोह तोर शिर जाकाघाउ मासकरजानि हिया आनंत सोचरकरहु मैं बांधौं धारधार मूठि धनि दुनौ तारि ठढीहीमीहिनअडाफाटिहि चण्डी दीन्हिवर मोहिं धारजेठठै तोरिरइ ईश्वर महादेव

की दुहाइ मोरे पथ न आउ धारधार बांधो लोहू ठढे धार फुटै मुनै फुटै मोरि सिद्धि गुरूके पाव शरण॥

धार बांधनेका दूसरा मंत्र।

माता पिता गुरू बांधौ धार बांधौ अस्त्री वश्ये कटै मुनै बांधौ हनुवन्तनसुर नवलाख शूद्रनपाके पांउ रत्नाकरै श्रीगोरखराउ एती देइन वाचानरसिंह के दुहाई हमारी सवति आद॥

अग्निस्तम्भन मंत्रः।

अपार वांधौ विज्ञान वांधौ घोराघाट आठ को-टि वैसंदर बांधौ हस्त हमारे भाइ आनहि देखे झझके मोहिदेखे बुझाइ हनिवन्तबांधौ पानीहोइ जाइ अग्नि भवते के भवै जस मदमती हाथी हो वैसंदर वांधौ नारायण भाषी मोरि भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥

अन्यच्च वीग वरावे के मंत्रः।

विगुलीतियुताक पठै कात एहा एहै नाथकै मा-न मोर पहरै बाढ़ै भीम मरहु विगजौ चापहु सीम॥

अन्यच्च मिश्रित मंत्रः।

गोरख चले बिंदेशकह सातो देहेबांधि से पांचो-

चोरविग यथा गोरखनाथ की दुहाई जौंकाहु सँतावे॥

राजाबशीकरण।

ओं च्चां क्षूं च्रूः।१२। सौं हं हं सः ठः ठः ठः ठः स्वाह्वा।इस मंत्रसे भोजन को अभिमंत्रित करके भोजन करने से राजा वशी भूत होता है।

अथवा जिस मनुष्य का नाम लेकर भोजन करै वोह निश्चय वसमें होता है।

उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करेहुए पुष्पोंकी मालाको सिरपर धारण करने से स्त्रियें वस में होतीहैं

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करेजाय फलका भक्षण करने से कामोदीपन होता है।

अन्यच्च।

ओं नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा। देव दाली रसं ग्राह्यं चुष्क चूर्णन्तु कारयेत्। कन्ययाच युवत्यावा गुटिकां कारयेद्बुधः॥१॥

राजानो वश्यतां यान्ति स्त्रियः पुंसश्चसर्वशः॥
चौरं भयं न तस्यापि नच शत्रुभयं क्वचित्॥
व्याधयः प्रशमं यान्ति शुभंचपरि जायते॥ २॥
पुष्पार्के श्वेत गुंजायाः मूलं पंच मलान्वितम्॥
ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वे वश्यो भवेद्ध्रुवम्॥ ३॥

मूस खेत घर छांड़ि बाहर भूमिजाइ दोहाइ हनू-
मानकै जौ अब खेतमहसुवर घरमह मुसजाइ ॥

अन्यच्च ।

चितफविंमनचूहा गांधी एपारी रावन घर बांधी॥

अन्यच्च ।

हरदीकर गांठी अच्छतपढ़िकै बराइब दुष्टके खेत
घरमह । पीतपीतांबर मूशागांधी । लेजाइहहु हनु-
वंततुवांधी । एहनुवंत लंकाके राउ । एहि कोणे पै-
सहु एहि कोणेजाउ ॥

केवल मूशबरावेके मंत्र ।

मूशा चूहा कुंभ कराइ । जबही पठवी तवही
जाइ । मूशके ऊपर मूशके फेट । तूजाइ काटहु आ-
नकेखेत । गौरापार्वतीके दुहाई महादेवकीआज्ञा ॥

शस्त्रास्त्रबरावे के मंत्र ।

वांधो तूपक अवनिवार न धरैचोट न परे घाउ
रक्षाकरे श्रीगोरखराउ । सप्तवार पढ़ै सर्वांगस्पृशे
द्रेणुना॥

अग्निस्तंभन मंत्रः ।

अज्ञानबांधो विज्ञानबांधो बांधो घोराघाट आठ

कोटि वैसंदर बांधो अस्त हमारा भाइ। आनहि देखे भभके मोहिं देखि बुझाइ हनुवंत बांधो पानी होइजाइ। अग्निभवेत के भवे जसमत्ती हाथी होइ वैसंदर बांधो नारायण साखि मोरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच॥

अन्यच्च।

अग्नि बांधौ बाहन बांधौ कुल्पाहा बांधो बांधो बीच की वायु चारिहु खुटैंवैसंदर बांधौ आतस मेरा भाव अवर देखे उमगे हमहिं देखे शीतल होइजाइ अग्नि गलिगण्डे लकड़ी बांधो बहिनि बांधो शाल हाथ जरे न जिह्वा जरे अनिवंतबीर की आज्ञा फुरै देखि वायुबीर हनुमन्त तेरी शक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥

कराही थांभेकेमंत्र॥

माहिथांभो माहिअर थांभो थांभोमाटी सार थांभ नो आपनो बैसंदर तेलहि करोतुषार। दिव्यके कराही पढ़ि७ बेर तौ जीतै॥

अन्यच्च॥

बन बांधौ बनमै दिनि बांधौ बांधौं कंठाधार त हाथाभो तेलतेलाई औथांभो वैसंदर छार बनमेलु

शीतल तातेलावे जयपार ब्रह्मा विष्णु महेश ती निउ चले केदार देवी देवी कामाक्षाकी दुहाई पानी पंथ होइजाइ ॥

प्रसंगादग्मुक्कारन मंत्र ॥

अग्नि भवतेकेभवे जशमदमतीपर पिण्ड दुःख पावै दोहाई नरसिंह जगदुःखपावै ॥

तेलस्तंभन मंत्रः ॥

तेल थांभो तेलाई थांभो अग्नि वैसंदर थांभो पांच पुत्र कुंताके पांचो चले केदार अग्नि चलंते हमचले अगिआ परा तुषार ॥

टौना झारेके मंत्र ॥

लोना सलोना योगिनि बांधे टोना आवहु सखि मिलि जादू कवनु कवनु देश कवनु फिरि आदि अफूल फुलवाई ज्यों ज्यों आवै बास त्यों त्यों फला नी आवै हमरे पास कवरू देवी की शक्तिमेरी भक्ति फुरो मोहनी ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च ।

सोम शनिश्चर भौम अगारी । कहा चललि देई अंधारी । चारिजटा वज्रके वार । दीनाहिं बांधो सोम-

दुवार। उत्तर बांधो कोइला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्र पाल चारि विद्या बांधि के देउ विशेष भवर भवर दिधिल भवरगण चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पाताल से वासुकी चलु रामचन्द्रके पायक अंजनी के चीर लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई जो टोना रहै एदी पिंड मन्त्र पढ़ि फूंके टोना कइल करावल न रहै ॥

मन्त्र टोना झारेके प्रत्यक्ष करेके।

लोहे के कोठिला वज्रके किवार। तेहिपर नावो बारम्बार। तेते नहिं पहनहिं एकहु बार। एक पंठा अनंडा बांधौ डीठि मूठि बांधौ तीरा बांधौ स्वर्गेइन्द्र बांधौ पाताले बासुकी नाग बांधौ सैयदके पाव शरण षोदा की भक्ति नारसिंह वादिकार खेलु २ शंकिनी डंकिनी सात सेतर के संकरी बारह मन के पहार तेहि ऊपर बैठु अब देवी चौतराकय आन जंभाइ जंभाइ गोरखकी दुहाई नोनाचमारीकी दुहाई तैंतीस कोटि देवताओं की दुहाई हनुमान् की दुहाई काशी कोतवाल भैरों की दुहाई अपने गुरुहि कटारी मारु देवता खेल सभ आपलेइ काशीकादि कादि काशीकर पाप तेहि देवताके कंध चढाइकाट जो मन मह क्षोभराखै॥

मन्त्र खीझारेके टोना चुंरैलके ।

एकांत परदा कराइ के नोन पानी से झारिए तौ टोनादिक न रहै उतरि जाइ तुरंत ।

ओं पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल आंगनद्वार घर मंझार खाट बिछौना गडइ सोवनार सागलन औ जेवनार बिरासौंधावे फुलेल लवंग सोपारी जे मुह तेल अवटन उवटन औअवनहान पहिरण लहंगा सारी जानडोरा चोलिया चादरि झीन मोट रूई ओढ़न झीन शंकर गौरा छेत्रपाला पहिले झारो वारम्वार काजर तिलक लिलार आंखि नाक कान कपार मुह चोटी कण्ठ अवकंष कांध बाहु हाथ गोड अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभी पेटी नीचे जोनि चरणि कत भेटी पीठि करि दाव जांघ पेडुरी घूठी पाव तर ऊपर अंगुरी चाम रक्त मांस डांड गुदी धातु जो नहीं छाडु अंतरी कोठरी करेज पित्तही पत्तिजिय प्राण सब बित बात अंकमने जागु बड़े नरसिंह कि आनु कबहु न लागु फांस पित्तर रांग कांच लोहरूप सोन साच पाट पटवशन रोग जोग कारण दीशन डीठिमूठि टोना थापक नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइनि योगिनि चुरइलि भूतव्याधि

परि अर जेजुतभनै गोरख वैन साच प्रगटरे विला-उकाली औ भैरव की हांक फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥

मंत्र ज्वर झारे के ।

ओंनमो अजैपाल की दुहाई जो ज्वर रहै तो महादेवकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच। इस मंत्र को सात ७ वार पढके झारै तौ ज्वर न रहै ॥

अन्यच्च ।

समुद्रस्योत्तरेकूले कुमुदोनामवानरः ।
तस्यस्मरणमात्रेण ज्वरोयातिदशोदिशम् ॥
इस मंत्रकोपढ २ के कुशासे झारेतौ ज्वर न रहै॥

मंत्र तृज्वर झारे के ।

कारीकुकरी सात पिल्ला व्याई सातो दूध पि-आई जिआई वाघ थन इलोकांश्चलाये के मंत्रे तीनो जाइ मंत्र पढि २ दाहिने हाथ से आंचर मीजत फूंके रोगी से रोग छुवाइ ॥

द्वितीय प्रयोग ।

ओं भगवति भग भाग दायिनी अमुकीं ममवश्यं कुरु २ स्वाहा ।

इस मन्त्रसे गुरुवार को लवण को अभिमन्त्रित

करके जिस स्त्री को खानपान में दे वह अवश्य वस में होगी।

द्वितीय मंत्र।

ओं ह्रीं महामातंगीश्वरी चांडालिनि अमुकीं पचपच दहदह मथमथ स्वाहा।

रविवार के दिन जिसका नाम लेकर दूध और शर्करा से होम करे वोह वसमें होगी।

उपरोक्त दोनों मन्त्रों को पुरश्चरण करते समय १०००० जप करने से सिद्धि होती है।

अन्य मंत्र।

ओं कामिनी रंजिनी स्वाहा।

असुं मत्रं अलक्तकेन स्त्रियःकरतले लिखेत् सा-वश्या भवति।

अन्य प्रयोग॥

ओं कुम्भनीस्वाहा

इस मन्त्र से १०८वार पुष्पको अभिमन्त्रित क-करके स्त्री को सुंगाने से वस में होगी

द्वितीय मंत्र।

ओं नमो नमः पिशानी रूप त्रिशूलं खड्गं

हस्ते सिंहारूढे अमुकीं मे वशमागच्छ २ कुरु २ स्वाहा

इस मंत्र को भोजपत्रके ऊपर लिखकर जिसका नाम लेके धूप दे वोह वस में होगा। परन्तु--इस मंत्र को ७ अथवा २१ दिन सिद्ध करना चाहिये।

अन्यच्च

ओं ह्रीं सः।

इति मन्त्रे मदनसदनां कुशध्वजं मेलियित्वा साध्यां वा साध्यां अयुतं १०००० जपे यथाभिलषित दिनेषु वश्यो भवति।

अन्य प्रयोग।

ह्रां अघोरे ह्रीं अघोरे हुं घोरघोर तरे सर्व सर्वे नमस्ते रूपे ह्रः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे विच्चे नवाक्षर चंडि मंत्रेण निमन्त्रयेत्तच्च बलिपूर्वकम्।

अन्य मंत्र प्रयोग।

ऐं भग भुगे भगनि भागोदरि भगमाले योनिभगनि पतिनि सर्वभगसंकरी भगरूपे नित्यक्लैं भगस्वरूपे सर्वभगानि मेवशमानय वरदेरेते सुरेते भगक्लिने क्लीं न द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविधे क्षुभक्षोभय सर्वसत्वाभगेश्वरि ऐं क्लूं जं ब्लूं भै ब्लूं मोब्लू हे हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।

जिस स्त्रीको वसमें करना होइ उसे देखता जाय और उक्त मन्त्र को जपे तो शीघ्र वसमें होगी।

दूसरा मंत्र।

ओं नमों उच्छिष्ट चाण्डालिनि पच २ भंज २ मोहे २ मम अमुकीं वश्यं कुरु २ स्वाहा।

भोजन करने के अनन्तर पके हुए चावलों को एक हाथ में लेकर इस मंत्र से पढ़े फिर उस भात को रखछोडे। इसीप्रकार १० दिन पर्यंत करे फिर दसों दिन के भातको लेके ७ वार मंत्र पढकर स्त्री को खानेके लिये दे अथवा उसके घरमें फेंकदे तौ वोह वसमें होगी।

परन्तु—नीचे लिखे यंत्र को अष्टगन्धसे भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजा करे प्रतिष्ठा करें और आसन के नीचे दावकर फिर मन्त्र जपै।
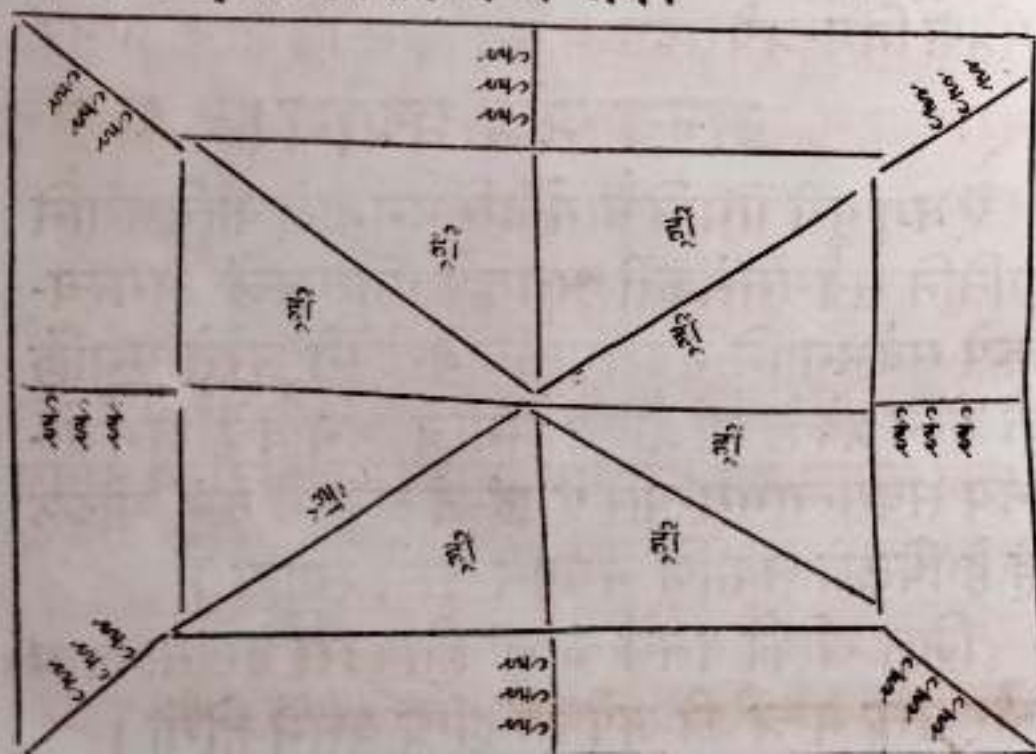
ओं कामिनि रंजनिस्वाहा ।

अस्यमन्त्रस्यायुतं १०००० पुरश्चरणं कृत्वा कामिनी हस्ते लिखेत् । सकृत रविगुरु भौमवासरे. एवं वारत्रयंविलिखेत् तदा स्त्री वश्या भविष्यति ।

अथान्य प्रयोग ।

ओंनमः क्षिप्रकामिनि अमुकीं मे वशमानय स्वाहा प्रातः कालही दन्तधावन करके जलभरी लुटिया हाथ में लेकर ७ वार मन्त्र पढके उस जल को पीवै इस प्रकार सात दिन पर्यंत करनेसे स्त्री वशमें होतीहै।

कामाक्रान्तेनाचित्तेन मासार्धजपतेनिशि ।
अवश्यंकुरुतेवश्यं प्रसन्नोविश्वचेटकः ॥ १ ॥

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं कामंग्राहय २स्वप्ने ममरूपे नखैर्विदारय२ द्रावय२ रदमहेन वन्धय २श्रीं फट् ।

द्वितीय मन्त्र ।

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाचि अमुकीं कामग्राहय पद्मे मम रूपेण नखैर्विदारय द्रावय द्रावय वन्धय२ श्रीं फट् ।

१–यदि नीचे लिखे दोनों मन्त्रों को कामयुक्त चित्त से १५ दिन पर्यंत जपै तो भगवान् महादेवकी कृपासे स्त्री अवश्य वशीभूत होगी ।

उपरोक्त दोनो मत्रों की वोही विधि है जैसी इन से पहले मन्त्र की विधान करी गई है।

अन्यमन्त्र प्रयोग।

ओं ठः ठः ठः ठः अमुकीं में वशमानय स्वाहा ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा। श्रीबटुकायनमः।

इस मन्त्र को १०००० जपे रविवार के दिन जप करने से सिद्ध होता है।

इसके प्रयोग करने की यह विधि है कि—रविवार के दिन जौ का आटा सवा पाव महीन पीसकर १ रोटी बनाके वेलै उसे मन्द २ आंचपर सेकै। एकही तरफ सेकै दूसरी तरफ न सेकै एकही तरफ से ऐसी सेकै कि--दोनो तरफ सिक जावै। फिर जिधर सेकी नहीं है उधर मन्त्र लिखै। सिंदूर को पानीमें घोलकर तर्जनी अंगुली से मंत्र लिखना चाहिये। फिर उसकी पंचोपचार पूजा करे। मिष्टान्न दही और चीनी उस रोटी के ऊपर रखना। यह सव वस्तु इस प्रकार रखनी जिस में सव रोटी ढक जावै।

इस प्रकार करके जिसे वसमें करना हो उसका नाम ले २ कर उस मन्त्रका १०८वार जप करै। इसके वाद मन्त्र पढ२के उस रोटी के टुकडे कर२केकाले

कुत्ते कू खवावै। इसप्रकार करनेसे अवश्य वसमें होगा

पूजन की सामग्री यह है—गन्ध, पुष्प, सुपारी, पान, दीपक, गोरे वटुक नाथ, और दक्षिणा।

इस मन्त्रका पुरश्चरण करते समय ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये।

आंखि झारेके मंत्र।

पानीके छीटे पढिके मारे सातबेर फलीमंडा जाइ।
सप्पींतिचसुकत्यांच च्यवनंशक्रमन्वितौ।
एतेषांस्मरणान्नृणां नेत्ररोगो प्रणश्यति।

उठीआंखिझारेके मंत्र।

ओं बने बिआई वानरी जहां २ हनिवन्त आंखि पीड़ा कषावरी गिहिया थनैलाइ चारिउजाइ भस्मत गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाच। आंखि पर हाथ फेरे सात बार पढ़के फूंकै तौ व्यथा और पीड़ा न रहै॥

रतौंधी झारेके मंत्र।

मंत्र पढि २ के फूके भाट भाटिनि सरिचली कहां

१—यदि स्त्री को वसमें करना होय तौ काली कुतिया को रोटी खवानी चाहिये।

२—यदि एक न खाय तौ दुसरे कुत्ते अथवा कुतिया को खवानी चाहिये।

जाइ बजावेउ समुद्र पार भाटिनि कहा मै बिश्रा वेंउ कुश की छाली विआवेंउ उपसमा छीकर मुडा अंडा घोसोंहिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल ऊतर तर है राजा अजैपाल करकंदार पानी भरत रहे उन्ह देखै पावावालाउ गोडिया मेला उजाल तैके मै अधोखी ईश्वर महादेय कै दोहाई येही घरी उतरि जाइ ॥

रस्सा झारेके मंत्र ।

पानी ७ बेर पढके पिये के देइ कारनी कर सो तुरंत छूटै ॥ ओं अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः मया-मयत्यंवलमीच्छयमाणः उभौ वणाच्टष्टिरुग्र पुयोषसत्ता देवेष्वाशिषो जगाम ॥ आतापि भच्छितोयेन वाता पिच महाबल । समुद्रः शोषितोयेन समेगस्त्यः प्रसी दतु । अगस्त्यं कुंभकरणं बशनिंचबड़वानलं। आहा र परिपाक्यर्थं स्मरेच्चवृकोदरम् ॥

दांतव्यथा झारेके मंत्र ।

पाढिके फूके दरदपै बेर ७व्यथा छूटै तुरंत ॥ अग्नि बांधौ अग्निश्वर बांधौ सो खाल विकराल बांधौ सो लोहा लोहार बांधौ वज्र के निहाय वज्रघन दांत पि-राय तो महादेव कै आन । नारा उखरा होइ तो हाथ तर्जनी आंगुरि से झारै ॥

सम्पूर्ण शिरोव्यथा के मन्त्र।

मालाकण्डा के वेर २१ तव फूके शिरोव्यथा छूटै॥ निसु नहिंरै रोइबद्धर मेघ गरजहि निसुनहि कहलधर कुफु निवेरी फुनि डमरू न वजै निसुनहि कहल विन्न पटु साचभइ॥

मंत्र हूक झारेके।

ओं सुमेरुपर्वत पर नोनाचमारी सोने की रांपी सोने की सुतारी हूक चूक वाह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र खारी वहावौ नोना चमारीकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाच वार इक्कीस पढै शरीर हूक न रहै॥

कर्णमूल मंत्र।

पढिके राखसे झारी कर्णमूल न रहै। वनाह गाठि बनरी तौ डाटे हनुमान् कंठा बिलारी बाघी थनैली कर्णमूल सभ जाइ रामचंद्र की बचन पानी पथ होइ जाइ॥

घीनहीके मंत्र।

एहर चालो मेहर चालो लंका छोडि विभीषण चालो। बेगि चल बेगि चल मंत्रसहि॥

मंत्र थनैली झारेके।

कंष बिलारी बघ थनैला पांचवान मोहि भैरों देल। कंष बिलारी बघ थनैला डावा पलटि जाहु घर अपने राजा मनेरी की दुहाई जौंडावार है गुरु की दोहाई॥

मेमरषीझारे के मंत्र।

पढि २ के फूके। राजा अजैपाल सागर खतवारा वट बांधा घाट उतइ ममरषी पानि पिउ सात राति मोहि पीपरपात गुंगी बौरी डोमिनि चंडालिनी तूहै नीकी ममरषी तिल एक रथ ठाठि कएठ झारि ममरषी क्रोध करु॥

अंडवृद्धि के मंत्र।

पढि पढि मले फूके अएडवृद्धि छूटै ओं नमो आदेश गुरु को जैसेके लेहु रामचन्द्र कबूत ओसइ करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अएड खेतहि श्रवइ अएड अएड विहण्ड खेतहि श्रवइ वाजंगर्भहि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर यहि मंत्र मह अनुभाव है चारि

बस्तुपर चलतहै जो स्त्री को पानीपढ़िके पिआवै तोगर्भश्रवइ महीनादुइतीनिका । पुरुष को पिआवै तो अंड बृद्धि छूटै नीकाहोइ । एक ढेलापढ़िके सांप के विपरीपरधरै तौ सांप निकलिजाइ । तीनिढेला पढिकेतीनिकोने फेंकिदेइ तौ खेतसूखिजाइ उपजे-नाही । दिन तीनि चारिका बोवाहोइ तिसपरचलै मंत्र पढ़ेकेवार तीनिउवार ॥

मृगीकर मंत्र ।

हाल हल सरगत मंडिका पुडिआ श्रीराम फुकै मृगीवायु सूखै ओं ठःठःस्वाहा एहीमंत्र लिखिके कंठ बांधे जब मृगी आवे ॥

खेत नीके उपजे और रक्षा रहै इसके मन्त्र ।

उलटथि नरसिंह पलटथि काया रक्षाकरथि न-रसिंहराया ॥

फूकाबागी के मन्त्र ।

बनेविआई अंजनि जायो सुतहनुवंत नेहरुवादे हरुवा जरिहोइ भस्मंत गुरूकीशक्ति मंत्रपढ़िवेर ७ सीकटी एक वा तीनि वा सातलेइ झारना फूकावा-घीनीकाहोइ ॥

अन्यच्च ।

भांमनसेति योगीभया जनेउतोरिनहरुआ किया न पाकै न फूटे न व्यथाकरे विरूपाक्ष की आज्ञा भीतरहि सरै ७ सातवेर पढ़ि पानीका छीटा मारव नहेरुवा ओपिआइव पानी मंत्र पढ़े वार २१ नहेरुवा न रहै ॥

पोतरहँडि व हूक और घेटमोर झारेके मन्त्र ।

मेघडंबर पोत्तरहड़ी तातीशरीर गरींगै जातीदोहाई अजैपाल कै जोनजायबांधि ॥

मंत्र दादके ।

नीकाहोय पानी परोरि पिआवे । ओंगुरुभ्योनमः दंवदंव पूरीदिशा मेरुनाथ दलक्षनामरे विशाहतो राजा बैरीघनआज्ञा राजा बासुकीके आनहाथ बेगे चलाव ॥

अन्यच्च ।

हाथ बेगे चलाइ अदिनाइ पवनपूत हनिवन्त करमोर कतमेरुचाल मंदिरचाल नवग्रहचाल दोष चाल दिनाइचाल डोरीचाल इन्द्रहिचाल चालर

चाल हतन्तविनासहकाल उठि विषितरुवरचाल हम हनुमंते मुगरे लिंडापरोरौ वर्धछले तरुपरि धा-नपरिहियव अष्टोत्तरशतव्याधि लावरे विशालाव अहरो विशआह दादुवाले को पानी पिआइव ॥

अन्यच्च ।

विषकै पाषरि विषकै मानि । विषै करिय भादि उजानि। एक मजाइ दादुकरिअ अमुका अंगे कस कंडु दादु दिनाइ के छेद करि सिद्धि गुरूकी पावशरण ॥

मंत्र रिसाके पानी परोरि पियाइ ।

ओं ककराके नास्यकोनअनअगनित अमुका के हर्षनहोय रक्ता पीता स्वेता जावत जीवति हर्षशत तावतप्रकाशंब्रह्महत्याप्राप्नोति ब्रह्मणेनमः रुद्राय नमः अगस्त्यायनमः गणेशायनमः ॥

कूकुर काटे तो झारेके मंत्र ।

कुम्हार चाकपरके माटी डंकपर फेरि फेरि झारे रोवां निकसे नीकाहोइ ॥

कारी कुत्ती विविलारी धौन कुत्ता कलोर फलाना काटा कूकुरवारधयल्यासु ॥

अन्यच्च ।

ओं कुलकुस्वाहा पानी मंत्रिकेदेव चिरुवा सात७।

मंत्र शींगी मछरिके।

शींगी मौरी मेवताशी मोरेमारे दुर्गादाशी जेथा-लषना ता पोखरा गौरा पैठि नहाहि महादेव पहि फूकाहि विष निर्विष होइ जाहि॥

मंत्र कठबेगुचीके।

सोनेके सिंधोरा रूपे लागाबान छवमासके मुअ-लिमे गुचीलागसिन जिषधरुवरुआ के कान धरुव-रुआ मंत्र तुहहि जगावे नोता योगिनि श्रीपार्वती जा-गु जागु उपरवैशे होइत ॥

मंत्र बीछी झारेके।

सुरही कारीगमइ गाइकी चमारी पूछी तेकरे गोबरे बिछी बिआइ बीछी तोरे कइ जाति गौरावर्ण अठारह जाति छ कारीछपीअरी छभूमाधारी छरत्न पवारीछछ कुंहु कुंहु छारि उतरु बिछी हाड़ हाड़ पोर पोरते कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेवको दुहाई गौरा पार्व ती को दुहाई अनीत टेहरी शडार बन छाइ उतरहि बीछी हनुमंत आज्ञा दुहाई हनुमन्तकी ॥

अन्यच्च।

परवत ऊपर सुरहीगाइ तेकरे गोबरे बीछी बिआइ

छः कारी छः गोरी छः का जोता उतारिकै विधाविछि ठावहिआ आठ गाठि नव पोर बीछी करे अजोर बलि चलु चलाइ करुवाउ ईश्वर महादेव के दुहाई जहां गुरू के पाव सरके तहदि गुरूके कुश कजुरी तहहि विष्णुपुरी निर्माजाइकै दुहाई महादेव गुरू के ठावहि ठाव बीछी पार्वती ॥

अन्यच्च ।

बीछी २ तोरेकै जाति छः कारी छः पीयरी छः परवारी वोधा पषाना पसरवपाउ तोरी विषितइ में नाहि ठाउ ऊपरजा सिगुधै षाउ शिव वचन शिव नारि हनुमान् के आन महादेवके आन गौरापार्वती के आन नोना चमारिनि के आन उतरि आउ उ-तरिआउ ॥

अन्यच्च ।

अंब हठ मुठि बैगनभावि उतरु बीछी मति करुवानि ॥

अन्यच्च ।

जे सँदेश लेइ आवे तेहि पानी परोरि पिआइ देव कायो षापे शिर मानिक रामुप मोड़ो मरिजासि अनषांधनो पीनी पावै बांधि उतरिजासि ॥

बीछूके विष चढानेके मंत्र।

टूटी खाट पुराने बान चढजा बीछू शिरके तान। जहां बीछूने काटा हो उस स्थान में इस मंत्रको फूंके तौ विष बढजायगा ॥

तत्रादौ सांप झारे के मंत्र।

उत्तर दिशि कारी वादरि तेहि मध्य ठाढ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारो शत खंड जाइ गदा मारे सातो पाताल जाइ ओं हर हर निर्विष शिवाज्ञा ॥

अन्यच्च।

थिरुपवन जेहि विष नाशे तेहि देखि विषधरहू कांपे सत्पज्र्जा आष विषमो संदीत्यैष्ठ्यै नहिं विषइ मेत्रे कुशलत्वालुगाले भावत्काल निर्विश होइ ॥

ज्वरबंधन झारेके मंत्र।

जटा ऊपर कारागरे ओं नमः शिवाय शिवकी आज्ञा पुनः कागाचरे भीटे पनिनिआपरे पीठे सवा भार विष निजबडं अपने डीठे ओं नमः शिववि-आज्ञा ॥

लहरि अगावे के मंत्र।

छवमास की परी डंककयाकी करार गराने न

तेरी मझिहि काग आवत कागा चरइ भीटे पानि आपरइ पीठे सवाभार विष निजवडं अपने उडीठे ओं नमः शिव विआज्ञा २ गिद्ध उड़इ ऊपर ईशार बाहन भय ठांवाहिषंब नोना परिहाथ षंडानके परि-डंक उठि ठाढि भइ जागु २ ईश्वर डुहुरे डंकहाडं कंडाडिगौ षंजरहू लागिकाइ देहांक देत आवै नोना योगिनि डंक उठै बिहसाइ ते सात समुद्रे माझे षंडी कबीर वबाठे जीव धरवरो आमंत्रि रहहि जगावै नोना योगिनी पारवती जागु परमइ शतहुहुरे डंक ॥

अन्यच्च ।

वोह परोस रात सुनु२कालं डंक डंक मरै तो मै मारो सात गद सुरल पांजरराषु एकका काल महेश समंत्र यहां आप कह काटे तौ मनमह चुहुकी के थुकिडारीं आनके काटे तो हाथ सें ओं चुहुकार अ धंकार कनुविशनार षार छिछी विशनाहि आपुकह काटे भा आनकह काटे तौ पढ़ि डंक पोछि देइ ॥

शत्रुपादत्राण मारण मंत्र।

इम्नामीन् सलास मातिन् ॥

एक चिल्ल ४० दिन का रोज करै जप १००० करके अमल करै। फूल, लोबान, सन्दल, चमेलीका

तेल, कस्तूरी, अरगजा, दशांग अवर इन सबको बराबर लेके चूर्ण करले इनकी धूप चमेली के तेल में देना ४० दिन तक अमल करना इसके बाद खूब मजबूत मिट्टी का एक पुतला बनाके सुखावे उसे अगाड़ी धरकर शत्रुका ध्यानकरके ऊपर लिखे मन्त्र का जप करै मालाजीया पोता के १०८ दाने की जपना। एक जूता उस पुतले के मारना इसप्रकार १०० माला जपकै १०० जूते मारना और धूप देते जाना इस तरह सात दिन तक करनेसे शत्रु के जूते लगेंगे ॥

अगर इस मंत्रको इसी प्रकार ४० दिनतक करै तौ शत्रुका कपाल भग्न होजायगा ॥

शत्रुके आवेश करनेका मंत्र।

जाग जागरे मसान मेरे सुरति करि २ फलानेका बेटा फलाने के घरजा जान जाय तौ तेरी मा बहिन की तीन तल्लाक ॥

इस मंत्रको सिद्धयोग में १०८ वार जपकै सिद्ध कररक्खै कबर में शूकर का एक दांत गाड़दे। इस मंत्र को २१ दिन तक कबर के पास खड़ा होके जपै इस प्रकार रात्रीको जप करै तौ शत्रु घरसे निकले

औ मुक्त करना होय तौ उस दांत को कबर में से निकाललै ॥

अनुभूत मंत्र।

बार बांधो बारनिकले जाकाट धारनी सूजाये लय बहरना चौंहाथसे तौ काट दांतसे दुहाई मा मा हवाकी।

पहले पोतनी मट्टीसे चौका लगावै। उसके ऊपर सुपेद चादर बिछाके ऊपर बैठके जपै। जपते वक्त पश्चिम दिशाको मुख करलेना चाहिये। एक घृतका दीपक बालके सन्मुख धरलेना। एक पैसे का हलुआ और एक पैसेकी पूरी। अतर मेवा। गांजेकी चिलम। यह सब पदार्थ रक्खै। दोलौंग के जोडे धरना। एक नीबू। यह सब दीपकके अगाडी रखके लोबानकी धूपदेना। इसके बाद संपूर्ण वस्तुओंको दरयावमें फेंकदेना। इसी प्रकार ४० दिन तक करना। परन्तु--नीबू और दीपकको धरा रहनेदे। फिर १०१ बार नीबूको अभिमांत्रित करके नीबूको छेदे इस प्रकार ४० दिन करनेसे शत्रु के उदरमें पीडा होगी और छेदन करनेसे मृत्युहोगी

वशीकरण प्रयोग।

ओं अस्य श्री बामदेव मन्त्रस्य संमोहनऋषिः।

गायत्री छन्दः । श्रीकामदेव देवता। अमुक वश्यार्थे जपे विनियोगः ।

अथन्यास–कां हृदयायनमः। कीं शिरसे स्वाहा।कूं शिखायै वौषट्। कामदेवो देवो देवता अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् ।

जपारुणं रक्त विभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारु कृतांग रागम्। कराम्बुजै रंकुश मित्तुचापं पुष्पास्त्र पाशौ दधतं नमामि ।

ओं कामदेवाय सर्वजन प्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मंत्र को ५००० जपके सिद्ध करना चाहिये कनेरके लालफूल और चमेलीका इत्रलगाके दशांश होम करै। बटुक के निमित्त कुमार को भोजन करावै उपर लिखे मन्त्र से १०८ बार चन्दन को अभिमंत्रित करके उस कुमारके तिलक लगावै। और जिसको बस करना हो उसका ध्यान कर के वटुक से संभाषण करै तो अवश्य वश होगा ॥

मारण प्रयोग ।

ऐं ह्रूं ऐं श्रीं ममशत्रून हानय हानय घातय घातय मारय मारय हुं फट् स्वाहा ।

इस मंत्रके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि—रात्रीके समय शत्रुका ध्यान करके काष्ठकीमाला के ऊपर १००० जप करै इसप्रकार ४८ दिनतक करने से अवश्य शत्रुकी मृत्यु होगी ॥

यन्त्र ।
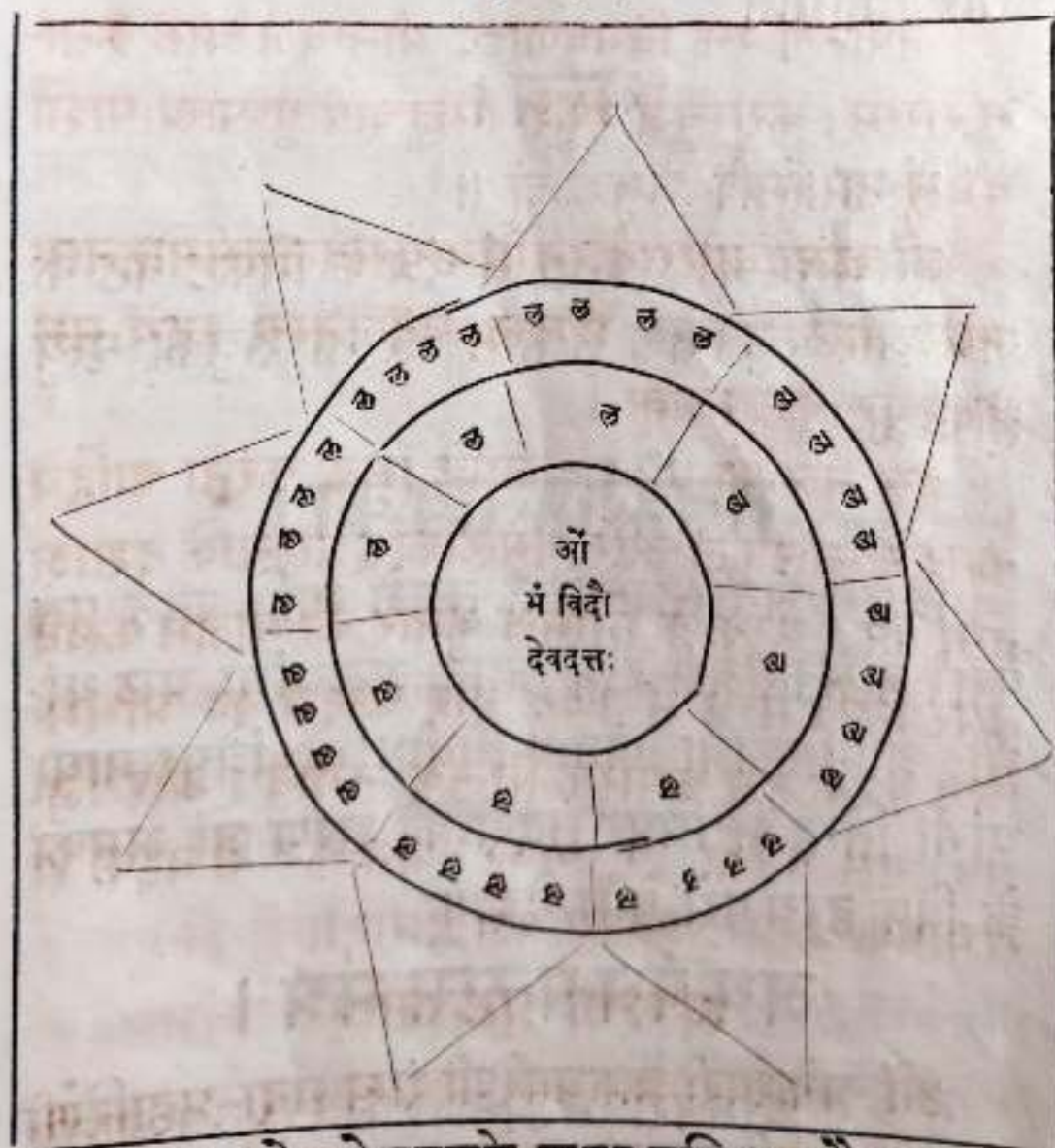
इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर हरिद्रा और हरताल

से लिखकर जिसका मारण करना हो उसका नाम लिखै और एकान्त में स्थित करदे तौ शत्रु का नाश होगा ॥

अथवा इस यंत्र की पूजा कर के यंत्र को एकान्त में रखकर नीचे लिखे मंत्र को जपै तौ शत्रुका मारण होगा।

मन्त्र।

भुंच्व भुंच्व अमुकं त्वं ॥

इस मंत्र को एकान्त में यंत्र के निकट बैठ के जपै और कड़वे तेल से होम करै तौ शत्रुकी मृत्यु होगी ॥

मंत्रवैरीपसावे का।

त्रिपुरा संदुरितजौतोहि तुजगे मानि जाउ पूत परारे बसिकरे वेरी रक्त नहाउ अलथांभौ थल थांभौ आपनिकाया खंड पृथिवीथांभौ त्रिपुरामाया थांभौ तिन्ह में त्रिपुर सुंदरी की शरण जौं अमुका के विष हरय परो वेगि देइ ॥

अथ बंध पलास मंत्र।

ओं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा प्रहारिणी अमुकस्य बंदी पलास। पढेवार २१ पढ़ेते बंदीछूटै॥

अन्यच्च ।

ओं गज गतेऽमकुरते दाम डंडंडंस्त फेफेफेत्कार फारे विशिष ज्वाला माला करालं हो हो हो होनि हांतं हसि हसि मनिसभा सपाटा रहा सेहं कारणा नौदौंस्तिरवन कुरुते सर्वतु मुखजंति । बार २१ ॥

अन्यच्च ।

ओं छोंटि मोटि वेटुकी कानी कटुकइ इतासा एक विदुजइ मगीजइ साविंदु जाइ अमुका का विबंधि पवंधि देषो कामाच्चा देवी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र । बार २१ ॥

अन्यच्च ।

ओं नमोस्तुते भगवते पार्श्वचंद्राधरेन्द्र पद्मावती सहितायमेऽभीष्ट सिद्धि द्रष्टग्रह भस्म भच्यं स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा हिलि हिलि मासंग-नि स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा । २१ बंदी मोचनं भवति ॥

अन्यच्च ।

बाघ वाहिनि सिंहेया काली काली कालाम्बी आ-जा देवी मैं तोरि शरणे वने नाही विशस तोहिदेवी त्रिभुवनेरमाष चौषष्ठी वंधन काटार भांगी आपिला

वाघ २ थापाएनी अलं चौषष्टि वंधन होइल वीरल काली कामा छोड़े हुंकार चौषष्टि वंधन काटार भागि भैल द्वार थार कालिकार आज्ञा एतन्मंत्रं द्वयमष्टोत्तरशतं मह्यं नाना विधं वंध छेदो भवति। २१ इमं मंत्रं पठित्वा करांगुलि मात्रय। प्रहारे दत्ते द्वार मुक्तो भवति ओं दं हं ओं आये आये चिंविठि होलो वभनंदिका कालिका। अनेन मंत्रेण श्वेत सर्षपं स्वेत ओठहुल पुष्पं पठित्वा प्रथमं द्वारे क्षिपेत ततःसर्वेद्वाराणि भंजंति ॥

अथ किंचित्सु प्रयोगः।

चौराबाधा सरपाउधाइ बन छाडि आनबन जाउ सावज धइ धइ ल्याउ रामचन्द्र मारलकुकुहूाबनके षोइहि षाइ मोरि जहां तहां कपसरे मोरे भरले कठहि निर्विस होइजाइ दुहाई रामचन्द्रकै दुहाई गौरा पार्वतीके जो एही बन रहै ॥

मन्त्र बनझारे के।

अर्ज्जुनः फालगुणोजिष्णुः किरीटी स्वेतबाहनः।
विभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः ॥

इस मंत्रको लिखिके पशुके गरे बांधे ऐतवार के अनुदये तौ खांग नीका होइ।

मंत्र किरहाझारे के

चमारे बभनेकैल मिताई । ओकरेपापे परुरसाई सूर्य्य देवता साखी । जो अब रसाइरहे माखी ॥

अन्यच्च ।

गंगापार बबुर के गाछी । झरे कीरा झरे रसाइ ईश्वर महादेव गौरा पार्वती कै दुहाई। अर्द्धोदय बेला सात गोटी पढि मारे न रहै ॥

अथ गो महिष्यादि दुग्धवर्द्धनमंत्र ।

ओं हुंकारिणी प्रसर शीतत । अनेन मन्त्रेण तृ-णान्यभि मन्त्र्यभोक्तुं दद्यात्पशुभ्यस्तदा बहुलंदुग्धं भवति ॥

अथ स्त्रीणांगर्भधारण विधिः ।

॥ वेदोक्तमंत्रः ॥

विष्णुयोनिंकल्पयतुत्वष्टारूपाणिविंशतु आसिं ञ्च-जंतु प्रजापतिर्द्धाता गर्भं विदधातु गर्भं धेहिसिनी वाली गर्भंधेहि सरस्वती गर्भस्ते अश्विनौ देवा अधत्तांपुष्परजस्रजौ बांझ जौ। एक बार जाइ तौ गर्भ रहै पुत्र होइ पै अपने पुरुष से न लागै बीज जे बाहेर आवे सो कक्षुही के शिर डारे मंत्र कुती

अन्यच्च ॥

शुक्र शनिश्चर भौम अवारी कहवा चलेहु डाइ निमारी हंकिनी डंकिनी चढ़ी पुरुब देशाके वैसी पीपरके डार सातसे योगिनि जागे मशान डीठिमूठि बांधिके आनगरह गाडकन मुखाय संतावै मनैवाद विनति पर भैरव टोनहि लैआउ ॥

अन्यच्च ॥

षिलल्लौराइ षिलल्लौलीन षिलौसोपनु सजांकालां मीडीठिअग्निपरोशे जेवगरुड पाथरखाइ भस्मत भैजाइ पत्थर शिलउ पत्थणि षिलावंरंडषिलषिलंग परवत हाथचढ़ा बशकरौं धौक लौहेको चनाचंडि डीठि मूठि भस्मतह्वोइजाइ आपनी डीठि पर डीठिपर पीठिपाछे घालु बाटवीर हनिवन्ततेरीशक्ति॥

गंडाबालक रक्षाके विधि करब ।

कुआरिकन्या का कातासूत तेरहताग कच्चा घोंघा मह ओनइस १९ चाउर बासमती के रींधि के भात षिआइब सूत के गंडापूरि बांधि गरे॥

मंत्र घोंघारक्षक ॥

घोंघाघोंघा समुद्र घोंघासमुद्रके कितजानि जा

नहु घोंघा जानि जरु सूत जरैतो पारवती केश आ-
चर जरै तौ महादेवके जटा जरै ॥

मंत्र गंडापूरेके ॥

ओं आसन योगी कपूत जंवीरी के पास न वोइ अवरी गैकरीर कतमासुकी सानी बिआरी जेहिमे बांधौ बांधिके जडाव घषधीकजाइ कावरूके विद्या कामाद्धा जलविधि नाथ गुरु गोरखनाथ रत्तपाल ॥

मंत्र पानीफूकि पिआवे के ।

पानी तीनि पानी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी शिव शक्ति आदि कुमारी अब छार भार सब तोहि की ताइ कतहू कतहूं का होउ धैले आउ बालक के तोके मोके पुण्य सब होय महादेव के जटा परे पार्वती के आंचर जो यह बालक दुःख पावै ॥

बालक झारेके मंत्र ।

शंकर यशसामी केशरि ललित केशरि पश्चिमि वारुणि भूकटेन कुटौ कारदंत विकारौं तेंतिश कोटि भूत भीमदेव संधारि भीम बालक के छरु अह कह बालक के ससुखना चोटो खाजो मोराकोषें गरुड कंठे समुद्रतीर गिधिनिउ आवथरोष भस्मत होइ जाइ ठौरु भक्तिनी स्वाहा मुआक्ष स्त्री के नाभि के हेठ योनि के ऊपर माद्धी जलते मारि राखि ओहि

ठहर तब मंत्र पढिके फूके माक्षी जीये बालक चंगा हो मरै न कबहि। यह प्रयोग गर्भ घातिनहु के करे जी अच्छा होय॥

अथ मक्षिका सजीवनि मंत्र।

आवष्णः इस मंत्र से मुई माक्षी जिये॥

अथ प्रेत चढाने का मंत्र।

अल्प गुरु अल्प रहमान। उसकी छाती चढ़ शैतान उसकी छाती न चढ़ै तौ मा बहिनकी सेजपै पग धरै अलीकी दुहाई २ ॥

रात्री में शुक्रके दिनसे आरंभ करै पहले मट्टी से गोल चौका लगावै। उसके ऊपर उत्तर की तरफ तिल और तेल का दीपक धरै। और आप दक्षिण को मुख करके बैठे। सुपेद फूल और रेवड़ी रक्खै लोबानकी धूप देके १७००० हजार जप करै। इस तरह करके वोह शीरीनी क्वारे लड़के को देदेनी चाहिये। तौ स्वप्नमें वर पावैगा॥

१००० जप रात्री में करने से शत्रुके ऊपर शैतान चढैगा।

१०८ नित्य जप करने से यह मंत्र सिद्ध रहता है।

१—जिसके ऊपर मंत्र चलाना हो उसका ध्यान करै और नाम लेना चाहिये॥

२—अली की दुहाई ३ बार देनी चाहिये।

अगर शैतान को उतारना होय तो गेहूंकी रोटी बनाके एक तरफ घी से चुपडै और एक गुड़की भेली उसके ऊपर धरकै दरियाव में बहादे तो शैतान उतर जायगा ॥

मोहनी यंत्र ।

इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर हरताल से लिखै चाहैजिस कलम से। उसका पूजन करे । फिर शत्रु के नाम प्रतिष्ठा करै फिर कन्या के काते हुए से सूत्रसे लपेटकर भूमिमें गाड़दे तिसपर बैठकै नित्य कुल्ला दतौन करै। तदनन्तर ७ लात मारै जबतक काम सिद्ध न हो तबतक ऐसाही करै

शत्रु ज्वर यंत्र ।

इस यंत्र को कोरे ठीकरे के ऊपर लिखके पुस्तके ऊपर शत्रुका नाम लिखे और अग्निमें डालदे तो शत्रु को ज्वर आवैगा ।

और जब अग्निमें से निकाला जायगा तब ज्वर उतर जायगा ।

शत्रुकी छाती फटनेका यंत्र ।

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	२१	९	१
४	६	२२	२५

इस यंत्रको बकरे के रुधिर से लिखकर धोबी के

पटले के नीचे गाड़दे । ऐसा करने से शत्रुकी छाती फटा करैगी ॥

अथ ज्वर मंत्र ।

ओं ह्रां ह्रां क्रीं सुग्रीवाय महावल पराक्रमाय सूर्य पुत्राय अमित तेजसे एकाहिक द्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर प्रेतज्वर महाबीर बानर ज्वराणांबन्ध ह्रां ह्रीं ह्रुं फट् स्वाहा ।

इस मंत्र से २१ बार झाड़ा देनेसे सब प्रकार का ज्वर दूर होता है

गर्भस्तम्भन मंत्र ।

ओंनमो गंगाउकारे गोरखबहाघोरघीपार गोरख वेटा जाय जय द्रुत पूत ईश्वर की माया इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके कारी कन्या के काते हुए सूतका गंडा बनाके पहरादेने से गिरता हुआ रुधिर वंद होजायगा ।

भूत नासनमंत्र ॥

ओं नमो काली कपाली दहीरस्वाहा ।

इस मंत्रसे १०८ बार तेल लगाने से भूत पुकार उठैगा ।

मंत्र प्रयोग ।

सतनाम आदेश गुरुकी आदेश पवन पानी का नाद अनाहद दुंदभी बाजै जहां बैठी जोग माया साजै चौसठ जोगनी बावन बीर बालक की हरै सब पीर आठोजात शीतला जानिये बंध २ बारे जात मसान भूत बन्ध प्रेत बन्ध छल बन्ध छिद्र बंध सब को मारकर भसमन्त सतनाम आदेश गुरुकी ॥

इस मंत्र को ग्रहण में १०८ बार जप के सिद्ध करलेना चाहिये । इस सिद्ध किये हुए मन्त्रसे झाड़ा देने से सब प्रकार की बाधा दूरहोती है ।

सिरका दर्द झाड़ने का मंत्र ।

सुरागाय के गर्भ में उपजा बच्छा बच्छे के पेट में कच्छा कच्छे के पेट में उपजा कालजा: कालजा कटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच महादेव की आज्ञा फुरो ॥

इस मन्त्रसे २१ वार सिरमें झाड़ा देनेसे सिर की पीडा दूर होगी ।

मनोरथ सिद्धि मन्त्र ॥

ओं हर त्रिपुर हर भवानी वाला राजा प्रजा

मोहनी सर्व शत्रु विध्वंसनी मम चिन्तितं फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।

इस मन्त्रको पवित्रताके साथ १०८ वार जपने से सिद्धि हो जाती है।

शत्रुमोहनी यंत्र।

सब प्रकारके रोग दूर होनेका यंत्र।

३३	३२	२७
३३	६६	३७
३७	४३	६७

इस यंत्रको भोजपत्र के ऊपर लिख के बालक के गले में बांध देने से सब प्रकारकी बाधा दूर होती है।

काम मंत्र ॥

तत्रादौ काम मन्त्रोद्धारः।

मद मद मदमादौ मादयेति द्विवारं तदनु चा-

खिल नीयं सौख्यदं ह्रींच तस्मात् ॥ अथचपदमुपा न्ते नाम रूपादि संज्ञा भवति मदन मन्त्रः स्वाहया संयुतोऽयम् ॥ १ ॥

अथ काम मंत्र ।

मदमद मदमादय मादय खिल ह्रीं अमुकनाम्नीं अमुकस्वरूपां स्वाहा ।

अथ ध्यानम् ॥

कनक रुचिर मूर्त्तिः कुंद पुष्पा कृतिर्वै युबति हृदयमध्ये निश्चिता दत्तदृष्टिः ॥ इति मनसिमनोजं ध्याययेद्यो जयस्थो वशयातिचसमस्तं भूतलं मंत्र सिद्धा ॥ १ ॥

सुबर्णकी समान जिसकी सुन्दर मूर्त्तिहै । कुन्दके फूलकी नाई सुपेद । और स्त्रियोंके हृदयके विषें जिसने दृष्टि लगारक्खी है । इस प्रकार जो कामदेव का ध्यान करताहै उसके सब बशमें होतेहैं ।

शतशत परिजापात् स्यादयं सिद्धिदाता दश शत कुसुमानां लोहितानांच होमात् ॥ इहतु सकल कार्यं वाम हस्तेन कार्यं मुपदिशति समासाज्ज्योति रीश स्वरूपा ॥

१००००जप करके दशांश१०००होमकरै । होम

लाल फूलोंसे करे। इस्में सब काम बांये हाथ से करना चाहिये ॥

चामुंडा मंत्रोद्धार।

चामुण्डे प्रथमे जपेच कथितं जृंभे तथा होमये । ज्ञातव्यं वशमानयेत्यपि पदंसाध्यं द्विपायुतम् । स्वाह्वन्तः प्रणवादिरेष कथितस्तक्कै००००हनः सन्मंत्रः कविसार्थ सेबित पदो नस्यद्वितीयोभुवि ॥

चामुंडा मंत्र।

ओं चामुण्डे जृंभेमोहये कजमानय स्वाहा ॥

चामुंडा ध्यान ।

दंष्ट्रा कोटि विशं कटासुवदना सन्द्रान्धकारेस्थिता खट्वांगासितमूढदोच्छितकरा वामेशयासंशिरः । श्यामापिंगलमूर्धजाभयकरा शार्दूलचर्माम्बरा चामुंडाशवबाहिनीजपविधौ ध्येयासदासाधकैः ॥

करोड़ों दाढों से विकराल । सुन्दर मुखवाली । महा अँधेरेमें स्थित । खाटपर बैठी । हाथ में तलवार लिये । काली और भूरे बाल वाली । भयदेने वाली

विधि ।

मृतकके ऊपर स्थित। ऐसी चामुंडाका ध्यान करै

जपतोलक्षमसौपलाशकुसुमै रग्रैर्दशांशेहुते सि द्धिंगच्छतिबासकर्मविधिना निःसंशयं मंत्रजापुष्पंस प्तनिधानमंत्रणकृतं नूनंददत्यांदरा। दत्तंरागबतींक रोतुवशगा मित्याहवागीश्वरः ॥

इस मंत्र को एकलक्ष १००००० जपै। दशांश- अर्थात् १०००० होम करै। होम पलाश के फूलों से करना चाहिये। होम करते समय एक२पुष्प को सात २वारअभिमंत्रितकरके होम करना चाहिये। जिसको वशकरना होय उसका ध्यानकरै अवश्य सिद्धिहोगी।

कामेश्वर मन्त्रोद्धार ।

आदौकामपदंततोनिगदितं संबोधनेदेववि प्रोक्ति कर्मपदान्वितंमृगसां नामस्फुटंनिर्निशेत्। तस्मादान यतांततोममपदं ज्ञेयंपदंचेत्यतोऽप्योंकारान्वितह्रींमि तिप्रकटितो मन्त्रोमयामन्मथः।

कामेश्वर मंत्र ।

कामदेवामुकी मानयममपदंवशंच।

अथ ध्यान ।

आकर्णाञ्चितकार्मुकोहरपदे धुन्वन्हरंसायकैर्भानो

संस्कृत पुस्तकालय !

इस पुस्तकालय में वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्म्म-
[शा]स्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, न्यायशास्त्र तथा हिन्दी
[भ]ाषाके अनेक प्रकारके पुस्तक हरसमय बिकने
[क]ो प्रस्तुत रहते हैं जिन महाशयोंको जिस पुस्तक
[क]ी आवश्यक्ता हो इस पते पर मंगाओ ।

पंडित हरिशंकरजी शास्त्री
अध्यक्ष संस्कृत पुस्तकालय
हरिद्वार.

लोयहदेखोक्याहै !!!

प्रिय सुहृद्वर्ग ! वर्त्तमान समयमें अनेक प्रकार
के तन्त्रशास्त्र सम्बन्धी विज्ञापन जिधर तिधर दे
खनेमें आतेहैं, परन्तु—वास्तवमें वे सबग्रन्थ वैद्यक
के सिद्ध होत्तेहैं । यथार्थ तन्त्र उसीको कह सक्ते हैं
जिससे उभयत्र साधुवादकी प्राप्तिहो । जब [illegible]
न् भूतनाथने समस्त सिद्ध मन्त्रोंको कील[illegible]

उस समय केवल सावर मन्त्रही कीलेजानेसे मुक्त रहेथे। सावर मन्त्रोंके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंक कलियुगमें सिद्धहोना दुस्तरही नहीं; वरु असम्भव है, परन्तु—सावर मन्त्र तत्काल अपनी सिद्धिका परिचय देतेहैं। इन मन्त्रोंका ज़प करके सिद्ध करने की विशेष आवश्यकता नहीं; लिखाहै कि—

अनमिल अक्षर अर्थ न जापू।
प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू॥

जिनको असली सावर तन्त्र लेनाहो, पुस्तक हाथमें थामतेही सिद्ध वनजानेकी कामनाहो, अथवा सच्चे सिद्ध बनकर इसलोकमें द्रव्य और यश, एवं अमुत्रमे मोक्षकी कामना होती इसी असली ग्रन्थको खरीदो।

पण्डित मण्डल कार्यालय
२७ जौलाय १८९८

संशोधकः टिप्पणी कारकश्च.
ब्रजरत्न भट्टाचार्य्यः
पट्टुवरगंज
मुरादाबाद.